हरियाणवी कथा ■ सुखदेव मल्होत्रा

गप्पु पुरा की कथा...

गप्पु पुरा की बात सुणाऊँ? एक दिन गाम के लोग सुबहाँ सै ई एक पीपल तले कट्ठे हो रेथे। तदै जयरूप नै एक बात सुणाई। ओ बोल्यौं, म्हारे परदादा जी एक बै ऊँटा ने चरावण ले जावे थो। वो गाम ते घणी दूर चल्या गयो। अर जा पुज्यो उहाँ के जंगलै" मां।

"उहाँ एक रुख के तले एक राक्सस सोवे थो। उसने एक लम्बों साँस भरयो ते म्हारो परदादो साँस की साथ खिंचतो होयो राकसस की नथुणे में जा पुज्यो। उसकै साथ छह ऊँट भी थे। वो भी ओस के साथ नाक में जा खोये।म्हारे घर आले उसका इंतज़ार करते रह गे। पण ओह वापस न आण पायो।"

जयरूप की बात सुण के भवाणी सिंह बोल्यौं, योह कोरो झूठ बोल रहयो है।" पण जयरूप अपणी बात पे डट्यो रहयो। उसे बखत भैरों सिंह ने कहयो, "जयरूप साची कह रहयो है। म्हारो परदादो भी एक बे राही भटक के उहाँ पुज्यो थो। बो नाई का काम कर्या करे थो। सो, राकसस ने उस तंई आपणी हज़ामत वणाण को कह्यो। वो राकसस की हज़ामत वणाण लाग्यौं।

"फेर...?" सबां ने कही।

"फेर के? राकसस ने एक लम्बो साँस भरयो अर परदादो को उस्तरो राक्सस की नाक में जा घुसयो। म्हारो परदादो भी उस्तरो ने ढूँढण उसकी नाक मां चलो गयो। राक्सस की नाक मां आठ-आठ गज ते भी ऊँचो बाल उग राख्यो थो। उस्तरो कांई मिलतो? पण जयरूप को परदादो ज़रूर मिल गयो। उसने म्हारे परदादो से पूछयो कि ओह के ढूँढे थो।"

"फिर के भयो?"

"म्हारे परदादो ने सारी बात बता दी। तद जयरूप के परदादा ने कही - इतणे दिन होगे, म्हारो एक ऊँट न दिख्यो, तेरो उस्तरो का ही मिलसी"? भैंरो ने कही।

"यो, सारी बाता का तुम्हें कैसे पता चाल्यौं?सबने पूछ्यो।

तब भैंरो बोल्यो,"एक बार राक्सस को छींक आगी, अर म्हारो परदादो नाक तै बाहर आण ढह्यो उसनै यो सारी बातां बताई।"

"अर बो उस्तरो?"

"उस्तरो तो अन्दर ही बालाँ मैं ही अटको रे ग्यो" ना कहाणी सुण सबे लोग प रे ग्यो।